दिनांक 15-9-1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

पुरुषार्थ के अंतिम लक्ष्य पर बाबा ध्यान दिलाते
महावीरों को पुरुषार्थ का सिंबल बनना सिखाते

अंतिम स्थिति के लिए पुरुषार्थ की गति बढ़ाओ
बाप समान सबके लिए खुद को सिंबल बनाओ

पुरुषार्थी जीवन की बच्चों बनाओ ऐसी पहचान
दूसरों के लिए पुरुषार्थ करना बन जाए आसान

अंतिम लक्ष्य की स्मृति अपनी बुद्धि में जगाओ
चतुर्भुज के दैवी संस्कार अपने लक्षण में लाओ

अव्यक्त फरिश्ता होकर आकारी रूप अपनाओ
अव्यक्त स्थिति का प्रभाव औरों को दिखलाओ

निमित्त भाव रखकर अपना हर कर्तव्य निभाओ
साकारी और आकारी रूप बारम्बार लेते जाओ

श्रेष्ठ शक्तिशाली ब्राह्मण होने का नशा चढ़ाओ
अव्यक्त रूप का साक्षात्कार औरों को कराओ

विघ्न विनाशक की स्मृति पर स्थित हो जाओ
विघ्नों से मुक्त होकर रूहानी कारोबार चलाओ